शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 जुलाई 2013

स्थापत्य कला में बेजोड़ चांपानेर

डा.रमेश आर.पटेल
आर्ट्स कालेज, राजेंद्र नगर,
साबरकांठा, गुजरात

शोध संक्षेप

पंचमहल जिले के अंतर्गत आने वाले चांपानेर का पुरातात्विक दृष्टी से काफी महत्व है। वर्ल्ड हेरिटेज ने चांपानेर को मान्यता दी है। यहाँ सल्तनत काल में निर्मित इमारतें स्थापत्य कला का बेजोड़ नमूना है। किसी समय यह गुजरात की राजधानी रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र में चांपानेर की प्रमुख इमारतों की चर्चा की गयी है।

प्रस्तावना

पंचमहाल जिले मुख्य क्षेत्र गोधरा से करीब 50 किलोमीटर दूर चांपानेर है। पुरातात्विक दृष्टि से महत्वपूर्ण चांपानेर की गिनती विश्व पुरातात्विक धरोहर में की जाती है। वनराज चावड़ा के मंत्री वनिक चान्पाजी ने इसे बसाया. मंत्री वणिक चांपाजे ने इसे बसाया। सन् 1300 में चौहान कुल के राजवीओ ने चांपानेर को गुजरात की राजधानी बनाया। राजवीओं की सत्ता सन 1484 तक रही। गुजरात के मुस्लिम सल्तनत के सुलतान महम्मडद बगेड़ा ने इसे राजधानी बनाया और इसे मुहम्मदाबाद नाम दिया। (डिस्ट्रिक्ट गजेटियर पृष्ठ 101) अपने नाम से इन्होने सिक्के चलाये। इस दौरान चांपानेर का खूब विकास हुआ, परंतु सन् 1553 में मुगल सम्राट हुमायूं ने चांपानेर पर आक्रमण कर दिया और तब से राजधानी बदल गयी।

मुहम्मद बगेडा ने पावागढ़ और जूनागढ़ दोनों जीत लिए। पावागढ़ पर्वत के नीचे के भाग में स्थित चांपानेर नगर में शाही महल के लिए सैम चौरस किले बन्वाये। बुर्ज सहित बना हुआ इसका प्रवेश द्वार काफी खूबसूरत है। राजमहल के विस्तार में मांडवी नाम का प्रवेशद्वारा दूसरे भागों से छूता हुआ मालूम पडता है। शाही किले के बाहर जुम्मा मस्जिद की भव्य इमारत है। यह भारतीय कलाकारी अनूठा नमूना है। इसके पांच मनोहर प्रवेश द्वार हैं। इसके ऊपर पांच कमानियों के छज्जे, सुंदर मीनारें और मुख्य कमान के पास बना हुआ छज्जा आकर्षक है। चांपानेर की इमारत नगीना मस्जिद, लीला गुंबद मस्जिद और शहर की मस्जिद गुजरात की स्थानीय स्थापत्य शैली के बेमिसाल नमूने है। चांपानेर के बाहर पूर्व में बड़े तालाब के ऊपर खजूरी मस्जिद और कबूतरखाना नाम से पहचाने जानेवाला हिल स्टेशन है। (पंचमहाल विकास वाटीका पृष्ठ 57-58)

चांपानेर के धार्मिक एवं शिल्प स्थापत्य :

जुमा मस्जिद : चांपानेर गाँव के बाहर पूर्व दिशा में 'गोधरा दरवाजा' प्रसिद्ध है। बुलंद दरवाजे के पास में प्राचीन मस्जिद है। सुलतान महम्मद बेगडा ने सन 1584 1509 के दौरान रेतिया नामक पत्थरों से तीन मंजिल की भव्य मस्जिद बनवाई। यह सल्तनत काल के दौरान निरिम्त अनेक मस्जिदों में से बेजोड़ है. महम्मद बगेड़ा

ने मुस्लिम सैनिकों को सामूहिक रूप से नमाज पढने एवं उनका मनोबल टिकाये रखने के लिए इसे बनवाया था. पूर्वाभिमुख सात कलात्मक मेहराबों से निर्मित इस मस्जिद के बारीक काम शिल्प का उत्तम नमूना है।

शाही दरबार गढ़ : रेतिया पत्थरों से निरिमित यह सफाईदार किला दूर से ही दिखाई देता है. पूर्व-पश्चिम में करीब एक हज़ार मीटर और उत्तर-दक्षिण में 250 मीटर की चढ़ाई और तीस फीट की ऊँचाई, सात-आठ फीट चौड़ी दीवाल से घिरे लम्ब चौरस आकार का भव्य किला पर्यटकों के आकर्षण का मुख्य स्थान है। सन 1484 में चौहान राजा चताई रावल को हरा कर चापानेर पर जीत दर्ज की थी। सुलतान महम्मद बेगडा से शुरू होकर उनके बेटे मुजफ्फर शाह, दूसरे उनके तीन बेटे सिकंदर खान, नासीर खान और बहादुर शाह के शासन कार के दौरान यह नगर बहुत समृद्ध रहा।

वोरा मस्जिद: इस किले के अंदर दक्षिण दिशा से प्रवेश करते हैं। वहां इस दरवाजे के नजदीक रेती और पत्थरों से सुलतान महमूद बेगडा द्वारा बनायी गयी सुंदर शाही मस्जिद दिखाई देती है। इस मस्जिद की पांच सुंदर मेहराबे हैं। यह सुंदर इमारत 112 स्तंभों पर खड़ी है। एक जैसे 5 गुंबद और 16 छोटे-बड़े गुम्बद धारण किए हुए यह प्राचीन मस्जिद महमूद बेगडा के समय की सुंदर स्थापत्य कला का उदाहरण है।

मांडवी: चांपानेर गांव के बीच में खड़ी यह प्राचीन इमारत गांव की शोभा में अभिवृद्धि कर रही है। स्थानीय लोगों ने इसे मांडवी नाम दिया है। दिलखुश महल के से मुख्या प्रवेश द्वार की यह इमारत पांच कमान और 48 स्तम्भ भी मौजूद है। मराठा शासन के दौरान इस इमारत का उपयोग जमात नाका के रूप में किया जाता था। इस भवन में भारत सरकार के पुरातत्व विभाग का स्थानीय कार्यालय है। इसके कम्पाउंड में प्राचीन तोप, पत्थर की मूर्तियां, तलवार आदि युद्ध सामग्री जनता के देखने के लिए रखी गयी हैं।

केवड़ा मस्जिद : चापानेर में जुम्मा मस्जिद से वायव्य दिशा में करीब एक-दो किलोमीटर की दूरी पर स्थित केवडा मस्जिद स्थापत्य कला का बेजोड़ नमूना है। पूर्वाभिमुख तीन मेहराबे और उत्तम बारीक नक्काशी काम से सुशोभित मस्जिद 98 स्तंभों पर खडी हुई है। इसकी पांचवी मंजिल पर जाने के लिए 76 सीढियां हैं।

नगीना मस्जिद : (मोती मस्जिद): केवड़ा मस्जिद से उत्तर-पश्चिम दिशा में लगभग आधा किलोमीटर दूर स्थित नगीना मस्जिद की मुख्य मीनार भूकम्प के कारण नष्ट हो गई। यह अपने समय की सुबसे सुंदर इमारत रही है। 100 स्तंभों पर टिकी यह प्राचीन इमारत सल्तनत युग के स्वर्ण युग की देन है। इस मस्जिद की दीवारों पर बहुत बारीक नक्काशी की गयी है।

बड़ा तालाब और जल महल: चांपानेर का निर्माण करते समय महम्मद बगेडा ने शहर की जनता को शुद्ध पानी, जल विहार, नौका विहार और उनके आनंद के लिए प्राचीन चांपानेर की पूर्वी सीमा से लगभग एक हजार क्षेत्रफल में बड़ा तालाब का निर्माण करवाया। इस विशाल रमणीय सरोवर में विपुल मात्रा में शुद्ध पानी बारहों महीने रहता है। इस तालाब में विश्वामित्र नदी का कितना ही पानी आ जाता है। बड़े तालाब की उत्तर दिशा में किनारे पर शाही परिवार के लिए आमोद-प्रमोद हेतु जल महल बनाया गया। इसके नजदीक सुंदर

मस्जिद का निर्माण करवाया गया। इसी समय शहर में ख्रिस्तियों ने बसाहट करना प्रारंभ की। चांपानेर के अस्तित्व में आने के बाद यहां पर एक से एक भव्य इमारतों का निर्माण किया गया।

खंडहर बताते हैं कि ये इमारत कभी बुलंद थी। पर्वत की तलहटी में बसे हुए यह प्राचीन शहर चांपानेर विशाल विस्तार में सल्तनत समय में निर्मित अनेक इमारतें आज भी भारत के लाखों लोगो को आकर्षित करती है। यह स्थान प्रवासियों के आकर्षण का केंद्र है। चांपानेर के आसपास बनी हुई इमारतो में हिन्दू-मुस्लिम स्थापत्य कला का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। इस कारण चांपानेर को वर्ल्ड हैरिटेज घोषित किया गया है। इस भव्य विरासत के बाद अहिंसा पर्वत पर और इसकी तलहटी में अनेक जैन मंदिर हैं। पावागढ़ के ऊपर महाकाली के मंदिर के दर्शन के लिए अनेक श्रद्धालु आते हैं। वर्ल्ड हेरिटेज घोषित होने के बाद इस प्राचीन नगर का ऐतिहासिक महत्व और अधिक बढ़ गया है।

संदर्भ:

1 जोशी घनश्याम, पावागढ़ दर्शन, चिराग प्रिंटर्स, अहमदाबाद, 1998

2 तोरवणे मि.विकास वाटिका, जिला महिती जातु, गोधर, 2008.2009

3 देसाई केशुभाई, नक़्शे में गुजरात, युनिवर्सिटी ग्रंथ निर्माण बोर्ड, अहमदाबाद, 1999

4 पटेल, जी.डी. (संपादक), पंचमहाल डि.ग., गुजरात सरकार, अहमदाबाद, 1972

5 पुरुषार्थी पंचमहाल, माहिती कमिश्नर कचेरी, गुजरात राज्य गांधीनगर, 2009

6 व्यास, रजनी, गुजराती अस्मिता, अनडा साहित्य प्रकाषन अहमदाबाद, 1988